Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

डिग्री से बड़ी है कौशल, एक प्रशिक्षक की नजर से

श्रीमती ज्योतिबाला राठौर*

* शोधार्थी, प्रशिक्षण अधिकारी (फैशन डिजाइनिंग एंड टेक्नोलॉजी) राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान, इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक कौशलों से लैस करना है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में जहाँ युवाओं की संख्या विश्व में सबसे अधिक है, वहाँ रोजगारपरक कौशलों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि क्यों डिग्री मात्र पर्याप्त नहीं है और किस प्रकार कौशल ही वास्तविक सफलता और आत्मनिर्भरता का आधार बनता है। इसमें शिक्षा और उद्योग के बीच की खाई, कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता, प्रशिक्षकों की भूमिका, सरकारी प्रयास तथा भविष्य की संभावनाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। शोध-पत्र से यह निष्कर्ष निकलता है कि 'डिग्री दरवाजा खोल सकती है, लेकिन आगे का रास्ता कौशल ही तय करता है।'

प्रस्तावना – शिक्षा हमेशा से ही मानव जीवन का आधार मानी जाती रही है। यह व्यक्ति को समाज में सम्मान, पहचान और अवसर दिलाती है। परंतु आधुनिक युग में केवल डिग्री प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है। आज उद्योग और समाज उस व्यक्ति को अधिक महत्व देते हैं जिसके पास वास्तविक कार्य करने की क्षमता हो।

डिग्री का महत्व नकारा नहीं जा सकता। यह ज्ञान का औपचारिक प्रमाण है और व्यक्ति को बौद्धिक दृष्टि से समृद्ध बनाती है। लेकिन व्यावहारिक जीवन में केवल सैद्धांतिक ज्ञान काम नहीं आता। उदाहरणस्वरूप, इंजीनियरिंग की डिग्री लेने वाला छात्र यदि मशीनरी चला ही न सके तो उसका ज्ञान अधूरा है। वहीं, कोई साधारण प्रशिक्षित युवक यदि मशीन को कुशलता से चला सके, तो उद्योग उसकी अधिक आवश्यकता महसूस करता है।

आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में 'स्किल इज द न्यू करंसी' (कौशल ही नई मुद्रा है) की परिकल्पना सत्य प्रतीत होती है। शिक्षा प्रणाली, प्रशिक्षक और उद्योग – सभी को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि युवाओं को केवल प्रमाणपत्र ही न मिले, बल्कि वे रोजगार के योग्य भी बनें।

समस्या का विवरण – भारत में प्रतिवर्ष लाखों विद्यार्थी विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों से स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री लेकर निकलते हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या सभी को रोजगार मिल पाता है? आँकड़े बताते हैं कि बड़ी संख्या में स्नातक युवा बेरोजगार हैं। इसका कारण यह नहीं कि नौकरियाँ कम हैं, बल्कि यह है कि उद्योगों को वह कौशल चाहिए जो विद्यार्थियों के पास नहीं है।

यहीं पर शिक्षा और उद्योग के बीच की खाई उजागर होती है। डिग्रीधारी युवाओं के पास ज्ञान है, परंतु कौशल की कमी है। दूसरी ओर, कौशलयुक्त युवा भले ही बड़ी डिग्री न रखते हों, परंतु वे तुरंत कार्य करने में सक्षम होते हैं और उद्योगों में पसंद किए जाते हैं।

अनुसंधान के उद्देश्य:

1. डिग्री और कौशल के तुलनात्मक महत्व का विश्लेषण करना।
2. यह समझना कि उद्योगों को किस प्रकार के कौशलयुक्त युवाओं की आवश्यकता है।
3. भारत में शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई को पहचानना।
4. प्रशिक्षकों की भूमिका और जिम्मेदारियों का आकलन करना।
5. सरकारी योजनाओं और नीतियों के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. भविष्य में कौशल शिक्षा की संभावनाओं पर प्रकाश डालना।

कौशल का महत्व

1. **सैद्धांतिक बनाम व्यावहारिक ज्ञान –** डिग्री यह दिखाती है कि व्यक्ति ने किसी विषय का सैद्धांतिक अध्ययन किया है। लेकिन कौशल यह दर्शाता है कि व्यक्ति वास्तव में क्या कर सकता है। उदाहरणस्वरूप, कोई भी डॉक्टर तभी सफल है जब वह रोगी का सही उपचार कर सके, केवल मेडिकल डिग्री होना पर्याप्त नहीं है।
2. **रोजगार की गारंटी –** आज के समय में केवल डिग्री रोजगार की गारंटी नहीं है। लाखों इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट स्नातक बेरोजगार हैं। वहीं, प्लंबर, इलेक्ट्रिशियन, फैशन डिजाइनर, तकनीशियन जैसे कौशलयुक्त लोग आसानी से काम पा लेते हैं।
3. **आत्मनिर्भरता का आधार –** कौशल व्यक्ति को नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला बना सकता है। उद्यमिता कौशल पर आधारित है। एक कुशल दर्जी, मेकैनिक या डिजाइनर अपना काम शुरू कर सकता है और दूसरों को भी रोजगार दे सकता है।
4. **सामाजिक और आर्थिक विकास –** कुशल जनशक्ति किसी भी देश की वास्तविक पूँजी होती है। जर्मनी, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने कौशल प्रशिक्षण के बल पर ही औद्योगिक क्रांति और आर्थिक विकास हासिल किया। भारत भी इस दिशा में आगे बढ़ रहा है।

शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई– पारंपरिक शिक्षा प्रणाली मुख्यत: सैद्धांतिक है। उद्योगों को व्यावहारिक अनुभव और समस्या समाधान की क्षमता वाले युवाओं की आवश्यकता है। अधिकांश डिग्री पाठ्यक्रमों में इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप या ऑन–द–जॉब ट्रेनिंग का अभाव है। परिणामस्वरूप, स्नातक युवा जब नौकरी के लिए आवेदन करते हैं तो उन्हें 'अनुभव की कमी' के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है। यह स्थिति तभी सुधर सकती है जब शिक्षा प्रणाली को उद्योगों की आवश्यकताओं से जोड़ा जाए।

भारत में कौशल शिक्षा की वर्तमान स्थिति– भारत सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं :

1. कौशल भारत मिशन वर्ष 2015 में शुरू हुआ, जिसका लक्ष्य 2022 तक करोड़ों युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देना था।
2. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, इसमें युवाओं को नि:शुल्क प्रशिक्षण और प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।
3. अप्रेंटिसशिप एक्ट उद्योगों में युवाओं को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिलाने के लिए बनाया गया।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, इसमें स्कूली स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण को पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात कही गई है।

हालाँकि चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, जैसे प्रशिक्षित प्रशिक्षकों की कमी, उद्योग और शिक्षा संस्थानों के बीच तालमेल का अभाव, ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी आदि।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य:

1. जर्मनी में ड्यूल एजुकेशन सिस्टम में विद्यार्थी पढ़ाई के साथ–साथ उद्योग में काम करते हैं।
2. जापान तकनीकी शिक्षा और अनुशासन पर विशेष ध्यान देता है।
3. सिंगापुर स्किल्स फ्यूचर प्रोग्राम के तहत हर नागरिक को जीवन भर कौशल प्रशिक्षण का अवसर मिलता है।
4. भारत को भी इन मॉडलों से सीख लेकर अपनी कौशल शिक्षा प्रणाली को और सुदृढ़ करना होगा।
5. प्रशिक्षकों की भूमिका और चुनौतियाँ
6. प्रशिक्षक किसी भी कौशल आधारित शिक्षा प्रणाली की रीढ़ होते हैं।

भूमिका :

1. केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि व्यावहारिक प्रशिक्षण और आत्मनिर्भरता सिखाना।
2. विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन और समस्या समाधान की क्षमता विकसित करना।
3. उद्योग की नवीनतम आवश्यकताओं और तकनीकों से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

चुनौतियाँ :

1. प्रशिक्षकों के लिए निरंतर प्रशिक्षण की कमी।
2. आधुनिक उपकरणों और प्रयोगशालाओं की उपलब्धता न होना।
3. विद्यार्थियों की मानसिकता जिसमें कई विद्यार्थी अभी भी डिग्री को ही सबकुछ मानते हैं।

कौशल है नई पूँजी

21वीं सदी में ज्ञान से अधिक कौशल को मूल्यवान माना जा रहा है। आईटी, स्वास्थ्य, मैन्युफैक्चरिंग, लॉजिस्टिक्स, फैशन और कृषि क्षेत्रों में कुशल युवाओं की भारी मांग है। वैश्विक स्तर पर भी भारतीय कुशल श्रमिकों और तकनीशियनों की मांग लगातार बढ़ रही है। डिजिटल युग में नई–नई तकनीकों (जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, 3डी प्रिंटिंग, फैशन टेक्नोलॉजी आदि) में कौशल प्राप्त करना आवश्यक है।

भविष्य की संभावनाएँ और सुझाव:

1. शिक्षा प्रणाली में सुधार जिससे डिग्री पाठ्यक्रमों में कौशल प्रशिक्षण को अनिवार्य किया जाए।
2. उद्योग व शिक्षा सहयोग से कॉलेज और विश्वविद्यालयों को उद्योगों के साथ साझेदारी करनी चाहिए।
3. अप्रेंटिसशिप और इंटर्नशिप को हर छात्र को कम–से–कम छह महीने का उद्योग अनुभव दिया जाए।
4. ग्रामीण क्षेत्रों पर ध्यान व गाँवों और छोटे कस्बों में भी प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएँ।
5. महिला कौशल विकास में महिलाओं को फैशन डिजाइनिंग, स्वास्थ्य, आईटी और उद्यमिता से जोड़ना।
6. निरंतर कौशल उन्नयन से प्रशिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को समय–समय पर नई तकनीकों में प्रशिक्षण देना।

निष्कर्ष– इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि डिग्री आधार है, लेकिन कौशल ही वास्तविक सफलता का मार्ग है। शिक्षा केवल प्रमाणपत्र देने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उसे रोजगारपरक और व्यावहारिक होना चाहिए। प्रशिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वे विद्यार्थियों को केवल पढ़ाएँ नहीं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाएँ।

यदि भारत को विश्व में अग्रणी बनना है, तो उसे 'डिग्री से बड़ी है कौशल' के सिद्धांत को अपनाना होगा। तभी हम 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार।
2. कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय, भारत सरकार।
3. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट, 2022।
4. जर्मनी और सिंगापुर के कौशल विकास मॉडल पर विभिन्न शोध पत्र।
5. प्रशिक्षकों और उद्योग विशेषज्ञों के व्यक्तिगत अनुभव।

****